विचार बिन्दु

अपनी नम्रता का गर्व करने से अधिक निंदनीय और कुछ नहीं है। –मारकस औरेलियस

ऐसी पढ़ाई किस काम की?

हाल ही में मुझे राजस्थान के सरकारी विद्यालयों में कक्षा 8 में पढ़ाई जानी वाली अंग्रेज़ी की पाठ्य पुस्तक देखने का अवसर मिला। इसे पढ़ने के बाद जो आश्चर्य-मिश्रित दु:ख मुझे हुआ, वह मैं पाठकों के साथ साझा करना चाहता हूँ। ऐसा मैं इस आशा के साथ कर रहा हूँ कि कोई शिक्षा प्रशासक या शिक्षाविद् इस ओर ध्यान देकर आवश्यक कार्यवाही करेंगे, ताकि राजस्थान के राजकीय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले बच्चों का बचपन और भविष्य दोनों को खराब होने से बचाया जा सके।

इस विषय पर विवेचन करने से पूर्व इस पुस्तक के एक अध्याय का एक अंश उद्धृत करना उपयुक्त होगा। यह निम्न प्रकार है:–

"He was afraid that it might kick and bleat at right and smell of its mother ~ He skirted the clearing and pushed his way into the thicket~ It was difficult to fight through with his burden~The fawn's legs caught in the bushes and he could not lift his own with freedom~ He tried to shield its face from prickling vines~ Its head bobbed with his stride ~ his heart thumped with the marvel of its acceptance of him ~ He reached the trail and walked as fast as he could until he came to the intersection with the road home~ He stopped to rest and set the fawn down on its dangling legs~It wavered on them~ It looked that him and bleated"

उपरोक्त पेरा इस किताब की पेज संख्या 91 से लिया गया है। कई वर्ष शिक्षा विभाग में बिताने के बाद और लगभग 10 वर्षों से शिक्षा से संबंधित मंचों के माध्यम से स्वैच्छिक कार्यकर्ता के रूप में अनेक शिक्षकों और विद्यार्थियों से निरंतर संवाद के आधार पर, मैं विश्वास के साथ यह कह सकता हूं कि बच्चों की बात तो छोड़ दीजिए, शिक्षक भी इस प्रकार के एक पैराग्राफ का न तो अनुवाद कर सकते हैं, न इसका अर्थ समझ सकते हैं। इसी कारण मजबूरन उन्हें कई प्रकार की पासबुक का सहारा लेना पड़ता है।

इन परिस्थितियों में एक प्रश्न उठना स्वाभाविक है। हम इस प्रकार की पुस्तकों के माध्यम से राजकीय विद्यालयों के बच्चों को क्या सिखाना और पढ़ना चाहते हैं? अंग्रेजी भाषा पढ़ाने का प्रमुख उद्देश्य बच्चों में यह क्षमता उत्पन्न करना है कि वे सही अंग्रेजी लिखना और बोलना सीखें और उसे समझ भी सके। इस प्रकार की किताबों से उनका अंग्रेजी भाषा के प्रति लगाव होना असंभव है। जिस सामाजिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि से राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी आते हैं, वे सामान्यतया निर्धन और वंचित वर्ग के होते हैं। उनके लिए सही हिन्दी लिखना-पढ़ना भी सरल नहीं होता। उनके लिए इस प्रकार की अंग्रेजी की किताबें चलाना पता नहीं किस प्रकार की सोच की उपज है? संभवतया ये पुस्तकें बड़े शहरों में रहने वाले तथा विश्वविद्यालयों के लब्ध प्रतिष्ठित प्राध्यापकों द्वारा लिखी जाती हैं जो राज्य की धरातल की स्थितियों से अनभिज्ञ होते हैं।

होना तो यह चाहिए कि प्रारंभिक कक्षा के विद्यार्थियों के लिए जो भी पाठ्य पुस्तकें बनाई जाएं वे उनके संदर्भ से जुडी हों। तब ही ये उनके लिए उपयुक्त हो सकती हैं। कहा भी गया है कि प्रारंभिक शिक्षा 'जाने से अनजाने' (known to unknown) की ओर ले जाने वाली होनी चाहियें।

उपरोक्त उल्लिखित पुस्तक के अधिकांश पात्र दूसरे देशों के हैं जिनके नाम और घटनाएँ भी हमारे यहां के विद्यार्थियों के लिए नितांत अपरिचित हैं। हम प्रारंभ से ही ऐसी अनजानी परिस्थितियों और घटनाओं से बच्चों को परिचित कराना चाहते हैं जिनके बारे में कल्पना करना भी राजकीय विद्यालयों के प्रारंभिक कक्षा के विद्यार्थियों के लिए असंभव है।

कोई पाठक चाहे तो अपने आसपास के किसी भी सरकारी विद्यालय के बालक-बालिकाओं के स्तर की तुलना उनकी पुस्तकों से करें तो पाएंगे कि दोनों में किसी भी प्रकार की कोई समानता नहीं है। न केवल बच्चे, अपितु शिक्षक भी जिस प्रकार की पृष्ठभूमि से आते हैं, उन्होंने भी इस प्रकार की किताबें न तो पढ़ी होंगी ना समझी होंगी।

क्या भारतीय संस्कृति, त्यौहार, रीति रिवाज, रहन-सहन, खेती-बाड़ी, वेशभूषा के सन्दर्भ पर सरल किताबें सरल भाषा में नहीं बनाई जा सकतीं? जब बच्चों को पुस्तकें अपनी सी लगेंगी तो उनकी रुचि इनमें उत्पन्न होगी। तत्पश्चात धीरे-धीरे उनके स्तर को बढ़ाया जा सकता है। पहला प्रयास यही होना चाहिए कि बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि उत्पन्न हो। वह तब ही हो पाएगी जब पुस्तक अध्याय एवं उसकी भाषा सरल ,सहज एवं रुचि के अनुरूप होगी। इन तीनों ही दृष्टि से इस प्रकार की अंग्रेजी की पुस्तक नितांत अनुपयुक्त हैं। आश्चर्य का विषय है कि शिक्षक भी इस प्रकार की पुस्तकों का विरोध नहीं करते और वे इन्हीं पुस्तकों के आधार पर बच्चों को पढ़ाने का काम करते हैं। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक यह है कि सभी बच्चे परीक्षा में अच्छे अंक लाकर अगली कक्षा में प्रवेश पा ले लेते हैं। यह वास्तव में चमत्कार ही है।

कोई पाठक चाहे तो अपने आसपास के किसी भी सरकारी विद्यालय के बालक-बालिकाओं के स्तर की तुलना उनकी पुस्तकों से करें तो पाएंगे कि दोनों में किसी भी प्रकार की कोई समानता नहीं है। न केवल बच्चे, अपितु शिक्षक भी जिस प्रकार की पृष्ठभूमि से आते हैं, उन्होंने भी इस प्रकार की किताबें न तो पढ़ी होंगी ना समझी होंगी। परिणामस्वरुप, शिक्षक और विद्यार्थी दोनों केवल पास बुक को सहारा बनाकर बच्चों को परीक्षाओं में अच्छे अंकों से पास करा देते हैं। यदि किसी को वास्तविकता पता करनी हो तो गत वर्ष के आठवीं उत्तीर्ण बच्चों की एक निष्पक्ष परीक्षा इस पुस्तक के आधार पर करा ली जाए। निश्चित रूप से लगभग सब अनुत्तीर्ण होंगे। संभवतया अधिकांश बच्चे 20 प्रतिशत अंक भी नहीं ला पायें। इस सारी व्यवस्था से हम आगामी पीढ़ी के साथ घोर अन्याय कर रहे हैं। यही कारण है कि तथाकथित शिक्षित व्यक्ति किसी भी रोज़गार के लिए नियोक्ताओं द्वारा अनुपयुक्त पाए जाते हैं। इस प्रकार की अनुपयुक्त, अप्रासंगिक पुस्तकों के ही कारण बच्चे 'ड्रॉप आउट' भी होते हैं। क्या कारण है कि हम अभी तक अपनी शिक्षा को बाल केंद्रित नहीं बना पाए, जबकि इस दिशा में बड़े-बड़े प्रयोग और अनुसंधान का गढ़ राजस्थान रहा है। इस बारे में दिल्ली सरकार ने जो प्रयास किए हैं वह न केवल सराहनीय हैं अपितु अनुकरणीय भी हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि यह पुस्तक अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की नहीं अपितु हिंदी माध्यम के राजकीय विद्यालय की है।

इसी परिप्रेक्ष्य में हमें सरकारी अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के खोलने के औचित्य पर भी विचार करना चाहिए। सरकार ने केवल वाहवाही और सस्ती लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूल खोल तो दिए। इस अदूरदर्शी निर्णय से उन विद्यालयों में पढ़ने वाले बालकों की स्थिति कितनी विकट हो गई है, उस ओर सरकार का कतई ध्यान नहीं है। वास्तविकता यह है कि अंग्रेज़ी माध्यम के नए विद्यालय खोलने के स्थान पर सरकार ने पूर्व में संचालित उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों को ही अंग्रेजी माध्यम का घोषित कर दिया। परिणाम स्वरूप उस विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को विद्यालय से निकाल दिया गया और उनके लिए किसी अन्य विद्यालय की व्यवस्था तक नहीं की। ये बालक-बालिका वर्तमान में इधर से उधर भटक रहे हैं और उनकी शिक्षा के बारे में कोई चिंता शिक्षा विभाग अथवा समाज को नहीं है। इसके विपरीत जो बालक-बालिका निजी विद्यालयों में पढ़ रहे थे उन्होंने वहां से छोड़कर इन विद्यालयों में प्रवेश लिया है। कुल मिलाकर इसका प्रभाव यह हुआ कि राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले निर्धन परिवारों के बच्चों को मजबूरन किसी निजी विद्यालय में प्रवेश लेना पड़ रहा है। इस प्रकार जो विद्यार्थी नि:शुल्क शिक्षा राजकीय विद्यालयों में प्राप्त कर रहे थे, उन्हें बड़ी धनराशि फीस के रूप में निजी विद्यालयों में प्रवेश हेतु देने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।

एक और समस्या जो सरकारी विद्यालयों में प्रवेश के लिए आ रही है, वह पुराने विद्यालय से टीसी प्राप्त करने की है। बिना निजी विद्यालयों से टी.सी. लाए उन्हें राजकीय विद्यालयों में प्रवेश नहीं दिया जा रहा है। जो विद्यार्थी निजी विद्यालयों में पढ़ रहे थे वहां कोरोना के कारण दो वर्ष में कोई पढ़ाई नहीं हुई। अभिभावकों की आय भी इतनी कम हो गई कि वे अब निजी विद्यालयों में नहीं पढ़ा सकते हैं। उन्हें पुराने निजी विद्यालय से टी.सी. भी नहीं मिल पा रही है क्योंकि उनकी अर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वे कोरोना काल की बकाया फीस जमा करा सकें।

शिक्षा विभाग को तत्काल इस दिशा में ध्यान देकर आदेश जारी करने चाहिए कि सरकारी विद्यालयों में कोई भी प्रधानाध्यापक किसी भी विद्यार्थी को आयु के आधार पर किसी कक्षा में प्रवेश देने से मना ना करे। यही मंशा शिक्षा का अधिकार कानून के अंतर्गत स्पष्ट रूप से व्यक्त की गई है। सरकारी विद्यालयों द्वारा प्रवेश के लिए टीसी की अनिवार्यता समाप्त करने की तत्काल आवश्यकता है। ऐसा नहीं होने पर लाखों बच्चे विद्यालय से बाहर ही भटकते रहेंगे।

सरकार के शिक्षा संबंधी नीति निर्धारकों एवं शिक्षाविदों से विनम्र अनुरोध है कि राजस्थान के लगभग 50 प्रतिशत बच्चों के बचपन एवं उनके भविष्य को ध्यान में रखते हुए तत्काल अपनी व्यवस्था में उपरोक्त सुझाव के परिप्रेक्ष्य में उपयुक्त बदलाव करें। पुस्तकों को प्रारंभिक कक्षा के विद्यार्थियों के लिए बहुत सरल, सहज एवं प्रासंगिक बनाएँ। उनके लिए प्रतिदिन काम आने वाले विषयों से संबंधित पुस्तकें बनवाएँ, ताकि ना केवल भाषा एवं गणित पर अपनी पकड़ बना सकें अपितु उनके काम आने वाली जानकारियां इनके माध्यम से प्राप्त कर सकें। इससे वे विश्वास के साथ अच्छे नागरिक के रूप में अपना जीवन यापन करने में सक्षम हो सकेंगे।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

मैनेजमैंट के सर्वश्रेष्ठ आदि गुरु विघ्नहर्ता देवों के देव विनायक

सनातनी हिन्दू भगवान गणेश को अनेक नामों से पुकारते हैं कोई इन्हें विघ्नहर्ता कहता है तो कोई इन्हें सिद्धि विनायक। असंख्य हिन्दू चाहे दुनिया के किसी भी भाग में निवास करते हों कोई भी नया काम शुरू करते हों। सबसे पहले भगवान गणेश की ही पूजा आराधना करते हैं। गणेशजी दुनिया में तिब्बत-सिंध-जापान-श्रीलंका सहित समस्त भारत की संस्क्रती के अन्दर समाये है। सच्चाई तो यही है कि गणेशजी जैन धर्म में ज्ञान-बुद्धि-सम्पन्नता का संकलन करने वाले गणों के प्रमुख के रूप में स्थापित है। बोद्ध धर्म की वज्रयान शाखा का मानना है कि गणेशजी की स्तुति-आराधना के बिना मन्त्र सिद्धि मुमकिन नहीं है। तिब्बत और नेपाल के वज्रयानी सम्प्रदाय के बोद्ध अपने आराध्यदेव भगवान बुद्ध की मूर्ति के समीप गणेशजी की मूर्ति भी स्थापित करते हैं।

शिव-पार्वती के पुत्र के रूप में भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को गणेशजी का जन्म हुआ था। गणेशजी के जन्म के समय समस्त देवी-देवता उन्हें आशीर्वाद देने को आये थे। भगवान विष्णु ने उन्हें ज्ञान का वहीं ब्रह्माजी ने उनको यश और पूजन का आशीर्वाद दिया। धर्मराज ने गणेशजी को धर्म एवं दया का आशीर्वाद दिया। भगवान शिव ने उन्हें उदारता, बुद्धि, शक्ति और आत्म संयम का आशीर्वाद दिया। माता लक्ष्मी ने कहा जहाँ गणेश रहेगें वहीं मै रहूगीं। माता सरस्वती ने उन्हें स्मृति, वाकपटुता-वक्तव्य शक्ति और वाणी का आशीर्वाद दिया। सावित्री ने गणेशजी को बुद्धी दी। ब्रम्हा-विष्णु-महेश ने गणेश को अग्र पूज्य, प्रथम देव और रिद्धि-सिद्धि प्रदाता का वरदान दिया। विभिन्न देवी-देवताओं के आशीर्वचन और वरदान से ही गणेशजी सार्वभोमिक, सार्वकालिक, सात्विक और सार्वदेशिक लोकप्रिय देव है।

गणेश में गण का अर्थ है वर्ग और समूह और ईश का अर्थ है स्वामी अर्थात जो समस्त जीव जगत के ईश हैं वहीं देवों के देव भगवान गणेश ही है। इसलिए उन्हें गणाध्यक्ष, लोकनायक गणपति के नाम से भी जाना जाता है। गणेशजी की चार भुजाएं चारों दिशाओं में सर्वव्यापकता की प्रतीक हैं। शिव मानस पूजा में श्री गणेश को प्रणव (ॐ) कहा गया है। इस एकाक्षर (ॐ) ब्रह्म में ऊपर वाला भाग गणेश का मस्तक, नीचे का भाग उदर, चंद्रबिंदु लड्डू और मात्रा सूँड है)। विघ्नहर्ता गणेशजी की व्याख्या करने से स्पष्ट होता है कि गज दो व्यंजनों से यानि ग एवं ज से बना हैं, यहाँ अक्षर ज जन्म और उद्गम का परिचायक है वहीं ग गति और गन्तव्य का प्रतीक है।

गणेशजी की मूर्ति का विसर्जन क्यों किया जाता है?

भाद्र शुक्ल चतुर्थी को गणेशजी की मूर्ति की स्थापना ढोल नगाड़े के साथ घरों में जाती है। भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी से अगले 10 दिन के बाद देश के विभिन्न प्रान्तों में गणपति बप्पा मोरिया, मंगल मूर्ति मोरिया, अगले बरस तू जल्दी आना के नारों के साथ गणपति की मूर्ति का विसर्जन हर्षोल्लास के साथ सरोवरों में किया जाता है। धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी से अगले 10 दिन तक गणपति को वेद व्यास जी ने भागवत कथा सुनाई थी। गणेश जी की शर्त थी कि महर्षि एक क्षण के लिए भी कथावाचन में विश्राम ना लेंगे। यदि वे एक क्षण भी रूके, तो गणेश जी वहीं लिखना छोड़ देंगे। महर्षि ने उनकी बात मान ली और साथ में अपनी भी एक शर्त रख दी कि गणेश जी बिना समझे कुछ ना लिखेंगे। हर पंक्ति लिखने से पहले उन्हें उसका मर्म समझना होगा। गणेश जी ने उनकी बात मान ली। इस कथा को गणपति जी ने अपने दाँत से लिखा था। दस दिन तक लगातार कथा सुनाने के बाद वेद व्यास जी ने जब आंखें खोली तो पाया कि लगातार लिखते-लिखते गणेश जी के शरीर का तापमान काफी बढ़ गया है। महर्षि वेद व्यास जी ने गणेश जी को आदेश दिया कि वो तुरंत पास के कुंड में डुबकी लगा कर अपने आप को ले ठंडा कर लें। अत: इसी मान्यता के अनुसार गणेशजी की मूर्ति का विसर्जन किया जाता है।

हाथ में अंकुश: गणेशजी का अंकुश हमें अपने लक्ष्य की और केन्द्रित रहते हुए हमेशा आगे बड़ने का पाट पढ़ाता है। मनुष्य को अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिये सतत प्रयास करते हुवे निरंतर आगे बढ़ना ही होगा। गणेशजी के हाथ में अंकुश हम सभी को भोतिकता से आध्यात्मिकता की तरफ चलने की शिक्केषा भी देता है। **आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ :** निर्सविवाद रूप से जीवन में हमेशा जीत उन व्यक्तियों की होती है जो परिस्थतियों के अनुसार अपने आप को परिवर्तित करके आगे बड़ते हैं।

चूहे की सवारी: सभी देवी-देवता गणेशजी की बुद्धिमता के कायल हैं, तर्क-वितर्क में हर देवी-देवता गणेशजी से हार जाते थे। प्रत्येक समस्या के मूल में जाकर उसकी मीमांसा एवं विवेचना कर उसका तर्कसंगत हल खोजना उनकी विशेषता है इसलिए हर एक के मन में यह सवाल उठना लाजमी है कि भगवान गणेशजी ने निकृष्ट माने जाने वाले चूहे (मूषक) को ही अपना वाहन क्यों चुना? इसी सन्दर्भ में यह भी

डॉ. जे.के. गर्ग

उल्लेखनीय है कि चूहा भी तर्क-वितर्क में किसी से पिछे नहीं रहता है, चूहे का काम हर किसी भी वस्तु को कुतर डालना है। जो भी वस्तु या चीज चूहे को दिखाई देती है, चूहे महाराज उसकी चीर फाड़ करके उसके प्रत्येक अंगो का विस्तृत विश्लेषण सा कर देते है, अत: संभवत गणेशजी ने चूहे के इन्हीं गुणों को देख कर चूहे को अपना वाहन चुना होगा। गणेशजी की चूहे की सवारी के बारे में यह भी कहा जाता है कि जैसे चूहे की इच्छा कभी पुरी नहीं होती,उसे कितना मिले हमेशा खाता रहता है वैसे ही मनुष्य की इच्छायें भी कितना भी मिले कभी पूरी नहीं होती क्योंकि लोभी आदमी का लालच कभी भी नहीं खत्म होता है।

खड़े होने का भाव: गणेशजी की यह अवस्था बताती है कि दुनिया में रहते हुए मनुष्य को सांसारिक कर्म भी करने जरूरी है। वस्तुत: इन सबमें एक संतुलन बनाये रखते हुए उसे अपने सभी अनुभवों को परे रखते हुए अपनी आत्मा से जुड़े रखना चाहिए और अपने जीवन को आध्यात्मिकता सेजोड़ कर अंतर मुखी बनना चाहिए। **हाथी का सिर :** इस कहावत से हम सभी परिचित हैं कि बड़ा सिर सरदार और बड़ा पांव गवांर का गणपति का बड़ा सिर खुशहाल जीवन जीने के लिये इंसान के अन्दर मौजूद असीमित बुद्धिमत्ता का प्रतीक है, वहीं विनायक के बड़े कान अधिक ग्राह्यशक्ति के प्रतीक हैं। गजानन लंबोदर हैं क्योंकि समस्त चराचर सृष्टि उनके उदर में ही विचरती है। हम लोगों यह भी जानना चाहिए कि गणपति के बड़े कान उनकी सर्वाधिक ग्राह्य शक्ति को दर्शाती है गजकर्णक की लंबी नाक (सूंड) महा बुद्धित्व का प्रतीक है।

विनायक का एक दंत: यह बतलाता है कि अच्छाई और अच्छों को अपने पास रक्खो वहीं बुराई और बुरों का साथ तुरंत छोड़ दो। गणेशजी के बाई तरफ का दांत टूटा है। इसका एक अर्थ यह भी है कि मनुष्य का दिल बाई और होता है, इसलिए बाई और भावनओं का उफान अधिक होता है, जबकि दाई और बुद्धिपरक होता है। बाई और का टूटा दांत इस बात का प्रतीक है कि मनुष्य को हमेशा अपनी भावनओं पर बुद्धि और विवेक से नियन्त्रण रखना चाहिए।

छोटी आँखें: गणेशजी की छोटी-पैनी आँखें हमें सिखाती है कि हमें सूक्ष्म एवं तीक्ष्ण दृष्टि वाला बनना चाहिये। सफलता प्राप्ति के लिये आदमी को एकाग्र चित्त बन कर अपना ध्यान हमेशा अपने लक्ष्य पर केंद्रित रखते हुए अपने मन पर नियंत्रण रखना चाहिए और मन को इधर-उधर भटकने से रोकना चाहिये। **बड़ा पेट:** विघ्ननाशक गणेश जी का बड़ा पेट हमें सिखाता है कि मनुष्य को अच्छी बुरी सभी बातों-भावों को समान भाव से ग्रहण करना चाहिए, उन्हें समान भाव से लेना चाहिये । दूसरे शब्दों में गणेशजी का बड़ा पेट मनुष्य को उदार आदतों का धनी बनने की सीख देता है। जीवन में कुछ बातों को पेट में पचा लेना चाहिये। धीर और गम्भीर पुरुषों का समाज में सम्मान होता है।

क्यों सिर्फ माता-पिता के चरणों में ही बसता है समस्त संसार?

एक बार देवता अनेकों आपदाओं में घिरे हुए थे, तब वे मदद मांगने भगवान शिव के पास आए। देवताओं की बात सुनकर शिवजी के दोनों पुत्रों कार्तिकेय व गणेशजी ने शिवजी से देवताओं की मदद करने आज्ञा मांगी तब भगवान शिव ने दोनों की परीक्षा लेते हुए कहा कि तुम दोनों में से जो सबसे पहले पृथ्वी की परिक्रमा करके आएगा वही देवताओं की मदद करने जा सकेगा। भगवान शिव के मुख से यह वचन सुनते ही कार्तिकेय तो अपने वाहन मोर पर बैठकर पृथ्वी की परिक्रमा के लिए निकल गए। किन्तु गणेशजी सोच में पड़ गए कि वह चूहे के ऊपर चढ़कर सारी पृथ्वी की परिक्रमा करेंगे तो इस कार्य में उन्हें बहुत समय लग जाएगा। तभी गणेशजी को एक उपाय सूझा। गणेश अपने स्थान से उठें और अपने माता-पिता की सात बार परिक्रमा करके वापस बैठ गए। परिक्रमा करके लौटने पर कार्तिकेय स्वयं को विजेता बताने लगे। तब शिवजी ने श्रीगणेश से पृथ्वी की परिक्रमा ना करने का कारण पूछा। तब गणेश ने कहा– माता-पिता के चरणों में ही समस्त लोक हैं। भगवान शिव ने गणेश को विजेता घोषित करके कहा कि वास्तविकता में माता-पिता के चरणों में ही समस्त लोक वास करते हैं।

भगवान गणेशजी के 12 स्वरूप

महागणेश (श्रीगणेश के इस स्वरूप की पूजा करने से जीवन में आने वाली हर परेशानी का समाधान होता है।

द्विज गणपति (गणेश के स्वरूप की व्याख्या की जाए तो उनके दो सिर और चार हाथ होते हैं। एक हाथ में उन्होंने माला, एक में मटकी, एक में किताब और एक में छड़ी पकड़ी है इस स्वरूप में पूजा करने से उत्तम स्वास्थ्य सुखद भविष्य मिलता है)

हेरंब गणपति (इस स्वरूप में गणेशजी शेर पर सवार रहते हैं और इनके पांच सिर और दस हाथ होते हेरंब गणपति आपके धन और संपत्ति की रक्षा करते हैं)

वीर गणपति (यह गणेश जी के पराक्रमी स्वरूप का नाम है, इस स्वरूप में उनकी सोलह भुजाओं में सोलह भिन्न-भिन्न प्रकार के हथियार होते हैं,वीर गणपति महिलाओं को बीमारियों से बचाते हैं)।

करपग विनायगर (अर्ध पद्मासन में बैठे दो हाथ वाले ये गणपति हमारी हर मनोकामना पूर्ण करते हैं और हम पर धन की वर्षा करते हैं)

गणेशनी (गणेशनी अधि-विनायक, भगवान गणेश का प्राचीनतम स्वरूप हैं। इनका सिर हाथी का नहीं वरन एक मनुष्य का ही है ये हमारी मार्ग में आने वाली हर बाधा, हर परेशानी को खत्म करते हैं)

सिद्धि-बुद्धि गणपति (भगवान गणेश अपने इस स्वरूप में अपनी दोनों पत्नियों के साथ विराजमान हैं। सिद्धि हमें सहजज्ञान प्रदान करती हैं और बुद्धि हमें व्यवहारिक ज्ञान की प्राप्ति करवाती हैं)।

नृत्य गणपति (मनोकामना पूर्ति करने वाले वृक्ष के नीचे नृत्य करते भगवान गणेश जी हमें खुशहाली और पूर्वजों का आशीर्वाद प्रदान करते हैं)।

विघ्नहर्ता (आठ हाथों वाले गणेश जी के इस स्वरूप की पूजा करने से आपकी हर समस्या और हर रुकावट का समाधान होता है

अलिंग नर्तन गणपति (अपने इस स्वरूप में भगवान गणेश कलिंग नामक सांप के फन के ऊपर नृत्य कर रहे हैं। यह बुराई पर अच्छाई की जीत दर्शाता हैं।

समस्या (अपने इस स्वरूप में भगवान गणेश कलियुग के उन लोगों की सहायता करते हैं जो अपने अच्छे कर्मों के बावजूद, समस्याओं को झेल रहे हैं), और अलिंग नर्तन गणपति (अपने इस स्वरूप में भगवान गणेश कलिंग नामक सांप के फन के ऊपर नृत्य कर रहे हैं। यह बुराई पर अच्छाई की विजय को दर्शाता हैं)

31 अगस्त 2022 को देश प्रथम पूज्य भगवान विनायक का जन्मोत्सव हर्ष उल्लास के साथ मना रहा है। बुद्धि-ऋद्धि-सिद्धि सुख सुस्वास्थ्य सम्पन्नता को देने वाले देव देवों गणपति भगवान के श्री चरणों मे कोटि-कोटि प्रणाम।

–डॉ. जे.के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक
कालेज शिक्षा जयपुर

मंगला आरती के साथ 638वां जग विख्यात बाबा रामदेवरा मेला शुरू

रामदेवरा, (कासं)। रामदेवरा में पश्चिमी राजस्थान के सुप्रसिद्ध लोकदेवता बाबा रामदेव की अवतरण तिथि भादवा-शुक्ला द्वितीया के उपलक्ष्य में सोमवार को अलसुबह मंगला आरती के साथ 638 वें रामदेवरा मेले का विधिवत रूप से शुभारम्भ हो गया।

इस अवसर पर बाबा की समाधि के मस्तक पर स्वर्ण मुकुट प्रतिष्ठापन किया गया। जिला कलैक्टर टीना डाबी ने साम्प्रदायिक सदभाव का संदेश देते हुए बाबा की समाधि की विधि विधान से पूजा-अर्चना की एवं यहां आने वाले श्रद्धालुओं को शुभकामनाएं प्रेषित की। मंगला आरती के अवसर पर पुजारी पं. कमल किशोर छंगाणी ने अतिथियों से वैदिक मंत्रोच्चार के साथ बाबा रामदेव की समाधि के दूध, दही, शहद, इत्र एवं पंचामृत से अभिषेक करवाया। बाबा को मेवा मिष्ठान एवं मिश्री का भोग लगाया गया। बाबा की समाधि पर नई चादर चढाई गयी एवं बाबा की भोग आरती की गई। अतिथियों ने बाबा की समाधि पर इत्र एवं प्रसाद चढाया एवं समाधि पर चंवर ढुलाया तथा बाबा के अखण्ड जोत के दर्शन किए। अतिथियों को बाबा का प्रसाद दिया गया व पवित्र झारी का जल आचमन करवाया। मंगला आरती के अवसर पर मंदिर के प्रमुख प्रवेश द्वार के खुलते ही बाबा के भक्तजन बाबा के जयकारे लगाते हुए बड़े उत्साह के साथ निज मंदिर में प्रवेश किया। अनेक श्रद्धालुओं ने बाबा की बीज के अवसर पर अपने ईष्टदेव के दर्शन कर अपने आप को धन्य महसूस किया। श्रद्धालुगण बाबा की अवतरण तिथि भादवासुदी बीज के अवसर पर ईष्ट देव के दर्शन करने के लिये रात्रि में ही बैरीकेटिंग के मध्य डेरा जमाए रखा था।

इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक भंवरसिंह नाथावत, नगर विकास न्यास जैसलमर की सचिव एवं मेला समन्वयक सुनीता चौधरी, उपखंड अधिकारी पोकरण राजेश विश्नोई, बाबा वंषज गादीपति भोमसिंह तंवर, सांकडा पंचायत समिति के प्रधान भगवत सिंह, नगरपालिका पोकरण के अध्यक्ष मनीष पुरोहित, रामेदवरा सरपंच समुन्दरसिंह तंवर ने बाबा रामदेव की समाधि की पूजा-अर्चना की एवं देश व प्रदेश में अमन चैन एवं खुशहाली की मंगल कामना की।

जिला कलैक्टर टीना डाबी, पुलिस अधीक्षक भंवरसिंह नाथावत ने कतार में खडे मेलार्थियों के लिए की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया एवं मेले से जुडे अधिकारियों को निर्देष दिए कि वे बाबा के भक्तों को सुगमतापूर्वक दर्षन कराने की व्यवस्था करें। उन्होंने सम्बंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे मेले के अवसर पर उमड़ी भीड़ को देखते हुए सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध रखें एवं सत्त रूप से मॉनेटरिंग करते रहें। उन्होंने संबंधित अधिकारी को निर्देश दिए कि वे सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान दें एवं कतार में सफाई कर्मचारियों को तैनात रखकर नियमित रूप से सफाई करते रहें। ताकि लम्बी कतारों के पास किसी प्रकार की गंदगी नहीं रहें। उन्होंने सभी अधिकारियों को टीम भावना से कार्य करने के निर्देश दिए।

रामदेवरा में बाबा रामदेव के मेले के शुभारंभ पर श्रद्धालुओं ने पूजा अर्चना की। फोटो राष्ट्रदूत

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 30 अगस्त, 2022

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, तृतीय तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, हस्त नक्षत्र रात्रि 11:49 तक, शुभ योग रात्रि 12:04 तक, गी करण दिन 3:34 तक, चन्द्रमा कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रवियोग रात्रि 11:49 तक है और रात्रि 3:18 से पुन: आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 3:28 से बुधवार दिन 3:23 तक रहेगी। मघा सिंह में प्रवेश सांय 4:20 पर।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:18 से 10:53 तक, लाभ-अमृत 10:53 से 2:05 तक, शुभ 3:37 से 5:11 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:09, सूर्यास्त 6:47

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कर्क
व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी और व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आय में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

मकर
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। परिवार में खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मीन
परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।